SCE संदर्भ पत्र B (व्यक्तित्व विकास पत्रक) की प्रभावशीलता का अभ्यास २०१५-१६

मार्गदर्शक
डॉ. आर. के. प्रजापति
प्रिन्सिपाल
स्वामी नारायण गुरुकुल, बी.एड.कोलेज पालनपुर

शोधकर्ता
लीना उपाध्याय
रिसर्च स्कॉलर,
पेसिफिक एकेडमी ऑफ़ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च युनिवर्सिटी, उदेपुर

प्रास्ताविक

शिक्षा का प्राथमिक प्रयोजन पुरुष और महिला में पहले से मौजूद सम्पूर्णता को प्रकट करना है शिक्षा का प्रयोजन बच्चे/व्यक्ति का चहुँमुखी विकास करना है। चहुँमुखी विकास के रूप में शिक्षा का प्रयोजन भौतिक, बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों में प्रत्येक बच्चे की छुपी हुई संभाव्यता का अनुकूलन करना है। लगातार बढ़ते प्रतिस्पर्धी परिवेश, जिसमें विद्यालयों को भी घसीटा जा रहा है, और माता-पिता की बढ़ती उम्मीदें बच्चों पर तनाव और चिंता का असहनीय भार डाल रही हैं, जिससे बहुत कम उम्र के बच्चों की व्यक्तिगत वृद्धि और विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है और इस प्रकार उनके सीखने का आनंद कम हो रहा है।

छात्रों की समझ, शैक्षिक लक्ष्य, ज्ञान की प्रकृति और एक सामाजिक स्थल के रूप में विद्यालय की प्रकृति सैद्धांतिक रूप के अनुसार कक्षा अभ्यास को मार्गदर्शन देने में हमारी सहायता हो सकती है। इस प्रकार संकल्पनात्मक विकास संबंधों को गहरा और समृद्ध करने और अर्थों के नए स्तरों के अर्जन की सतत प्रक्रिया है। शिक्षा का एक सर्व सामान्य हेतु समग्र विकास भी है। शिक्षा के माध्यम से जीवन की सर्वोत्तम गुणवत्ता हाँसिल की जा सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न गतिविधियों द्वारा दिए गए निरंतर समग्र मूल्यांकन की प्रभावशीलता को जानने के लिए उत्सुकता शोधकर्ता को प्रस्तुत शोध कार्य में प्रवृत्त करती है।

1. समस्या कथन

SCE संदर्भ पत्र B (व्यक्तित्व विकास पत्रक) की प्रभावशीलता का अभ्यास |

2. उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है।

1. SCE के संबंध में पत्रक B की प्रभावशीलता को जानें ।
2. SCE के संबंध में पत्रक B की कार्यान्वयन (अमलीकरण) के संबंध में शिक्षकों की राय जानें।

3. व्याप विश्व

वर्तमान अध्ययन के तहत, अहमदाबाद जिले के देत्रोज, मांडल, विरमगाम तालुका की स्कूलों के शिक्षकों को शामिल किया गया है।

4. न्यादर्श चयन

न्यादर्श यादृच्छिक रूप से चुना गया था।

क्रम	तहसील नाम	शिक्षक की संख्या
1	देत्रोज	50
2	मांडल	50
3	विरमगाम	50
कुल		150

5. शोध पध्धति

वर्तमान शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

6. उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा निर्मित निष्णांत तज्ज्ञ द्वारा मार्गदर्शित तैयार कि गई शिक्षक अभिप्रायावलि को उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है। जिसमें 20 विधान से एवं प्रत्यक्ष वार्तालाप से शिक्षकों से अभिप्राय लिए गए |

7. जानकारी का एकीकरण / पृथ्थकरण

प्रशिक्षण वर्ग में शिक्षकों से व्यक्तिगत रूप से प्रत्यक्ष दौरा करने के बाद जानकारी एकत्रित की गई । शिक्षकों द्वारा दिए गए उत्तर से डेटा तैयार किया गया था। उपर्युक्त अभिप्रायावली से प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों की त्रिबिंदु आधारित राय ली गई थी। जिसमें सहमत, असहनीय और तटस्थ राय की मांग की गई है |

8. निष्कर्ष

- ज्यादातर शिक्षकों का मानना है कि अधिकांश शिक्षण उद्देश्यों को फॉर्म बी में सफल माना जाता है|
- रिपोर्ट 'बी' का मूल्यांकन करके छात्रों के शौक़ के विषयों को जाना जाता है |
- रिपोर्ट 'बी' छात्र के व्यक्तिगत मूल्यांकन में सहायक होता है।
- रिपोर्ट 'बी' मूल्यांकन के माध्यम से छात्र के विचारों को समझने में मदद करता है।
- ज्यादातर शिक्षकों का मानना है कि रिपोर्ट 'बी' में दिए गए सामाजिक गुणों का मूल्यांकन करने में तटस्थ होना मुश्किल है।
- अधिकांश शिक्षकों इस कथन से असहमत है कि रिपोर्ट 'बी' के कार्यान्वयन से छात्रों को अधिक तनाव रहता है।
- अधिकांश शिक्षकों का मानना है कि रिपोर्ट 'बी' द्वारा मूल्यांकन का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

9. उपसंहार

कुछ समय से शिक्षक नए मूल्यांकन विधियों के आधार पर काम कर रहे हैं। उनके अनुभवों के आधार पर, उनसे निरंतर और समग्र मूल्यांकन प्रक्रिया से संबंधित उपयोगी पत्रकों के आधार पर उनके विचारों को समझने के लिए प्रस्तुत शोध आयोजित किया गया है। शोध के परिणाम रूप हम जान सके कि -

- छात्रों के पसंदित विषयों को प्रस्तुत मूल्यांकन पत्र द्वारा प्राथमिकता दी जाती है।
- शिक्षक - छात्र संबंध अधिक दृढ़ होते हैं ।
- शिक्षा प्रक्रिया प्रभावी बनती है।

संदर्भसूची

1. उचाट, डी. इ. एच.ओ.जोशी, एन.एस.दोंगा, अनिल अंबासना - आप एक शोध रिपोर्ट कैसे लिखते हैं? : शिक्षा विभाग, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट।
2. देसाई, एच.जी. और देसाई के.जी. (1992). अनुसंधान विधि और प्रविधि (5 वी आवृत्ति) अहमदाबाद: विश्वविद्यालय ग्रन्थ निर्माण बोर्ड - गुजरात राज्य
3. मोदी, डी. और डॉ भाल जे. - शिक्षा भवन, भावनगर विश्वविद्यालय भावनगर - संशोधन माधुकरी
4. देसाई, कृष्णकांत और स्व. देसाई हरिभाई - विश्वविद्यालय ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, गुजरात राज्य - मनोवैज्ञानिक मापन
5. त्रिवेदी, एम. डी. और पारेख बी.यू. - शिक्षा में सांख्यिकी विश्वविद्यालय ग्रन्थ निर्माण बोर्ड, अहमदाबाद, गुजरात राज्य
6. sureshnchaudhari.blogspot.com
7. https://meghpanchal.wordpress.com/sce-mulyankan-patrako
8. https://gcert.gujarat.gov.in/gcert/information/evalution.htm